

डैनियल की पुस्तक - संख्या एक सौ अड़तालीस

भविष्यवाणी की पट्टिकाओं का अनावरण: हबक्कुक का दर्शन और मिलर का स्वप्न

Jeff Pippenger

2024-03-20

उलाई नदी के दर्शन में जो ज्ञान में वृद्धि दर्शाई गई है, वही अंततः हबक्कुक की दो पट्टिकाओं पर लिखी गई थी।

उन भविष्यवाणियों के साथ, जिन्हें वे दूसरे आगमन के समय पर लागू मानते थे, ऐसी शिक्षा भी गुंथी हुई थी, जो उनकी अनिश्चितता और उत्कंठा की स्थिति के अनुकूल विशेष रूप से ढाली गई थी और उन्हें इस विश्वास में धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करने के लिए प्रोत्साहित करती थी कि जो बात अभी उनकी समझ के लिए अस्पष्ट थी, वह उचित समय पर स्पष्ट कर दी जाएगी।

इन भविष्यवाणियों में से एक हबक्कुक 2:1-4 की थी: 'मैं अपनी चौकी पर खड़ा रहूँगा, और मीनार पर अपना स्थान लूँगा, और यह देखने के लिए चौकसी करूँगा कि वह मुझसे क्या कहेगा, और जब मुझे ताड़ना दी जाएगी तब मैं क्या उत्तर दूँगा। तब यहोवा ने मुझे उत्तर दिया और कहा, दर्शन लिख, और पट्टों पर उसे स्पष्ट लिख दे, ताकि दौड़ते हुए भी पढ़ने वाला उसे पढ़ सके। क्योंकि यह दर्शन अभी भी नियत समय के लिए है; परन्तु अंत में यह बोलेगा और झूठ न बोलेगा। चाहे वह देर करे, उसकी प्रतीक्षा कर; क्योंकि वह निश्चय आएगा, वह देर न करेगा। देखो, जिसका मन घमण्ड से फूल गया है, वह उसके भीतर सीधा नहीं है; परन्तु धर्मी अपने विश्वास से जीवित रहेगा.'

"1842 में ही इस भविष्यवाणी में दिया गया निर्देश—'दर्शन को लिख, और पट्टों पर उसे साफ-साफ अंकित कर, ताकि दौड़ने वाला भी उसे पढ़ सके'—ने चार्ल्स फिच को दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य के दर्शनों को चित्रित करने के लिए एक भविष्यवाणी का चार्ट तैयार करने का सुझाव दिया था। इस चार्ट के प्रकाशन को हबक्कुक द्वारा दिए गए आदेश की पूर्ति माना गया। परन्तु तब किसी ने यह ध्यान नहीं दिया कि उसी भविष्यवाणी में दर्शन की पूर्ति में प्रतीत होने वाली एक देरी—एक ठहरने का समय—का भी उल्लेख है। निराशा के बाद यह शास्त्र बहुत अर्थपूर्ण प्रतीत हुआ: 'दर्शन अभी नियत समय के लिए है, परन्तु अंत में वह बोलेगा, और झूठ न बोलेगा; यद्यपि वह ठहरे, तो भी उसकी बाट जोह; क्योंकि वह निश्चय आएगा, वह विलंब न करेगा.... धर्मी अपने विश्वास से जीवित रहेगा।' महान संघर्ष, 391, 392."

हबक्कुक की दो पट्टिकाएँ भविष्यसूचक दृष्टि से दो गवाह हैं। बाइबिल के अनुसार, सत्य की स्थापना के लिए दो गवाहों को साथ लाया जाता है।

पर यदि वह तेरी न सुने, तो अपने साथ एक या दो और को ले जा, ताकि दो या तीन गवाहों के मुँह से हर एक बात ठहराई जाए। मत्ती 8:16.

जब हबक्कुक की दो पट्टिकाएँ (1843 और 1850 के अग्रणी चार्ट) एक-दूसरे पर रखी जाती हैं, तो वे उन सत्यों की पुष्टि करती हैं जो मिलर के स्वप्न के "रत्न" थे। 1843 की भूल, जो पहली पट्टिका पर दर्शाई गई थी, जब दूसरी पट्टिका के साथ मिलाकर देखी जाती है, तो दर्शन के "विलंब काल" को स्थापित करती है। मिलर (उस इतिहास के प्रतीकात्मक प्रहरी) ने पूछा कि अपने इतिहास पर चल रही बहस के दौरान उसे क्या कहना चाहिए।

मैं अपने पहरे पर खड़ा रहूँगा, और मीनार पर अपना स्थान लूँगा; और देखता रहूँगा कि वह मुझसे क्या कहेगा, और जब मुझे ताड़ना दी जाएगी तब मैं क्या उत्तर दूँगा। हबक्कुक 2:1.

प्रभु ने मिलर को दर्शन लिखने का आदेश दिया, और अपने स्वप्न में उसने वह संदूक, जिसमें वह दर्शन था, अपने कमरे के केंद्र में रखी मेज़ पर रखा।

और प्रभु ने मुझे उत्तर दिया और कहा, “दर्शन लिख, और उसे पट्टिकाओं पर स्पष्ट लिख, ताकि जो उसे पढ़े वह दौड़ सके।” हबक्कूक 2:2.

तब तालिकाएँ ठहराव का समय और पहली निराशा को चिन्हित करती हैं।

क्योंकि दर्शन अभी नियत समय के लिए है; परन्तु अन्त में वह बोलेगा और झूठा न ठहरेगा। यद्यपि वह विलंब करे, फिर भी उसके लिए प्रतीक्षा करो; क्योंकि वह अवश्य आएगा, वह विलंब न करेगा। हबक्कूक 2:3.

तब ज्ञान में वृद्धि के आधार पर प्रकट होने वाले दो वर्ग प्रस्तुत किए जाते हैं.

देखो, जिसका मन घमण्ड से फूल गया है, वह उसके भीतर सीधा नहीं है; परन्तु धर्मी अपने विश्वास से जीवित रहेगा। हबक्कूक 2:4.

उपासकों के दो वर्ग दानिय्येल के बारहवें अध्याय की परख की प्रक्रिया से प्रकट होंगे।

और उसने कहा, हे दानिय्येल, तू अपनी राह चला जा; क्योंकि ये वचन अन्त के समय तक बन्द और मुद्राबन्द रहेंगे। बहुत से लोग शुद्ध किए जाएंगे, और निर्मल बनाए जाएंगे, और परखे जाएंगे; परन्तु दुष्ट दुष्टता ही करते रहेंगे; और दुष्टों में से कोई न समझेगा; परन्तु बुद्धिमान समझेंगे। दानिय्येल 12:9, 10.

दानिय्येल के "बुद्धिमान" वही मत्ती पच्चीस की बुद्धिमान कुँवारियाँ हैं, जो विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराई गई थीं, और दुष्ट वे मूर्ख कुँवारियाँ थीं जो घमण्ड से फूल गई थीं। मिलर के स्वप्न के अंत में, वे रत्न दस कुँवारियों के दृष्टान्त में उस तेल का प्रतीक थे, जो संदेश था।

जब हम उन संदेशों को ग्रहण नहीं करते जो वह हमें भेजता है, तब परमेश्वर का अपमान होता है। इस प्रकार हम उस स्वर्णिम तेल को ठुकरा देते हैं, जिसे वह हमारी आत्माओं में उंडेलना चाहता है ताकि उसे अँधेरे में रहने वालों तक पहुँचाया जा सके। जब यह पुकार आएगी, 'देखो, दूल्हा आ रहा है; उससे मिलने को बाहर जाओ,' तब जिन्होंने पवित्र तेल प्राप्त नहीं किया, जिन्होंने अपने हृदयों में मसीह के अनुग्रह को नहीं संजोया, वे मूर्ख कुँवारियों के समान पाएँगे कि वे अपने प्रभु से मिलने के लिए तैयार नहीं हैं। उनके भीतर तेल प्राप्त करने की सामर्थ्य नहीं होती, और उनके जीवन बर्बाद हो जाते हैं। रिव्यू एंड हेराल्ड, 20 जुलाई, 1897.

अंतिम दिनों में मिलर के रत्न दस गुना अधिक चमकेंगे, और संख्या दस तथा प्रकाश—दोनों ही परीक्षा के प्रतीक हैं। अंतिम दिनों में, जिन्हें मिलर के स्वप्न के अंत में दर्शाया गया है, हबक्कूक की पट्टिकाओं पर दर्शाया गया सत्य का प्रकाश एक परीक्षात्मक संदेश उत्पन्न करता है, जो दस कुँवारियों के दृष्टान्त में 'आधी रात की पुकार' का परीक्षात्मक संदेश है। वह परीक्षात्मक प्रक्रिया मिलराइट इतिहास की परीक्षात्मक प्रक्रिया की पुनरावृत्ति है, क्योंकि अंतिम दिनों में दस कुँवारियों का दृष्टान्त अक्षरशः दोहराया जाता है।

“मुझे प्रायः दस कुँवारियों के दृष्टान्त की ओर संकेत किया जाता है, जिनमें से पाँच बुद्धिमान थीं और पाँच मूर्ख। यह दृष्टान्त अक्षरशः पूरा हुआ है और होगा, क्योंकि इसका इस समय के लिए विशेष अनुप्रयोग है, और तीसरे स्वर्गदूत के संदेश के समान, यह पूरा हुआ है और समय के अंत तक वर्तमान सत्य बना रहेगा।” Review and Herald, August 19, 1890.

प्रतीक्षा काल का अनुभव मिलर के स्वप्न के अंत में अक्षरशः दोहराया जाएगा, और तब उसके रत्न सूर्य से दस गुना अधिक चमकेंगे, इस प्रकार यह दर्शाते हुए कि वे रत्न दस कुँवारियों के दृष्टान्त में अंतिम परीक्षा का प्रतिनिधित्व करते हैं। दस एक परीक्षा का प्रतीक है, और दस दिनों के अंत में दानिएल और वे तीन वीर, बाबुल का आहार खाने वालों की तुलना में, देखने में अधिक सुन्दर और अधिक मोटे-ताज़े थे। हबक्कूक में जो घमण्डी लोग विश्वास से नहीं, धृष्टता से जीते थे, उन्होंने बाबुल का चरित्र विकसित किया। मिलराइट इतिहास में वे बाबुल की बेटियाँ बन गए, और हबक्कूक में उनके चरित्र की पहचान के लिए पापसी का उपयोग किया गया है।

देखो, जिसका मन फूला हुआ है, वह उसके भीतर सीधा नहीं है; परन्तु धर्म अपने विश्वास से जीवित रहेगा। हाँ, साथ ही, क्योंकि वह दाखमधु से पाप करता है, वह घमण्डी मनुष्य है; वह घर में नहीं ठहरता; वह अधोलोक के समान अपनी लालसा बढ़ाता है, और मृत्यु के समान है, और तृप्त नहीं होता; परन्तु वह सब जातियों को अपने पास बटोरता है, और सब लोगों को अपने पास इकट्ठा करता है। क्या ये सब उसके विरुद्ध एक कहावत न उठाएँगे, और उसके विरुद्ध एक उपहासपूर्ण लोकोक्ति न कहेंगे, और कहेंगे, हाय उस पर जो अपना नहीं है उसे बढ़ाता जाता है! कब तक? और उस पर जो अपने ऊपर मोटी मिट्टी का बोझ लादता है! क्या जो तुझे डसेंगे वे अचानक न उठ खड़े होंगे, और जो तुझे सताएँगे वे न जाग उठेंगे, और तू उनके लिए लूट का माल न बनेगा? क्योंकि तूने बहुत-सी जातियों को लूटा है, इसलिए सब जातियों के बचे हुए लोग तुझे लूटेंगे; मनुष्यों के लहू के कारण, और देश, नगर, और उसमें बसनेवालों पर हुई हिंसा के कारण। हबक्कूक 2:4-8.

मत्ती अध्याय 25 की कुँवारियों पर आई परीक्षण प्रक्रिया ऐसे उपासकों का एक वर्ग उत्पन्न करती है, जिनमें उत्तर के राजा (पापसी) का चरित्र विकसित हो गया है, जो वही शक्ति है जिसने 'बहुत-सी जातियों को लूटा'।

यहोवा यूँ कहता है, देखो, उत्तर देश से एक जाति आ रही है, और पृथ्वी के छोरों से एक महान राष्ट्र उठ खड़ा होगा। वे धनुष और भाले थामेंगे; वे निर्दयी हैं और दया नहीं करते; उनकी गर्जना समुद्र के समान है; वे घोड़ों पर सवार होकर तेरे विरुद्ध युद्ध के लिए पंक्तिबद्ध आते हैं, हे सियोन की बेटी। हम ने उसकी कीर्ति सुनी है; हमारे हाथ ढीले पड़ गए हैं; व्यथा ने हमें पकड़ लिया है, जैसे जच्चा स्त्री की पीड़ा। खेत में बाहर मत निकलो, न मार्ग पर चलो; क्योंकि चारों ओर शत्रु की तलवार और भय है। हे मेरे लोगों की बेटी, टाट कस ले, और राख में लोट; शोक कर जैसे एकलौते पुत्र के लिए, अत्यंत कड़वा विलाप कर; क्योंकि लुटेरा अकस्मात हम पर आ पड़ेगा। यिर्मयाह 6:22-26.

हबक्कूक के दो वर्ग हैं: वे जो विश्वास से धर्म ठहराए जाते हैं, और वे जिन्होंने बाबुल की शिक्षाओं को खाया और पिया। मिलर के स्वप्न के अंतिम दिनों में जिन्हें कुँवारियों के रूप में दर्शाया गया है, वे या तो मसीह का चरित्र विकसित करते हैं और इस प्रकार परमेश्वर की मुहर प्राप्त करते हैं, या फिर वे पापसत्ता का चरित्र विकसित कर पशु का चिह्न ग्रहण करते हैं।

नैतिक अंधकार के बीच सच्चे प्रकाश के चमकने का समय आ गया है। तीसरे स्वर्गदूत का संदेश संसार भर में भेजा गया है, जो मनुष्यों को यह चेतावनी देता है कि वे अपने माथों पर या अपने हाथों में पशु का चिह्न या उसकी प्रतिमा का चिह्न न लें। इस चिह्न को ग्रहण करना अर्थात् वही निर्णय करना जो पशु ने किया है, और उन्हीं विचारों का समर्थन करना, जो परमेश्वर के वचन के प्रत्यक्ष विरोध में हैं। जो कोई यह चिह्न ग्रहण करता है, उसके विषय में परमेश्वर कहता है, 'वह भी परमेश्वर के प्रकोप की उस मदिरा को पिएगा, जो उसके रोष के प्याले में बिना मिलावट उंडेली गई है; और वह पवित्र स्वर्गदूतों के सामने और मेमने के सामने आग और गंधक से यातना पाएगा।' Review and Herald, 13 जुलाई, 1897.

जो कुँवारियाँ बाबुल की दाखरस पीती हैं, वे अंततः परमेश्वर के क्रोध का दाखरस पीएँगी। यशायाह में, इफ्राइम के मतवाले सब कुछ उलट-पुलट कर अपनी अंधी मदहोशी प्रकट करते हैं, और उस कृत्य को 'कुम्हार की मिट्टी' ठहराया जाता है।

"the daily" को मसीह के प्रतीक के रूप में पहचानना, "the daily" के सत्य को उलट देता है, क्योंकि "the daily" एक शैतानी प्रतीक है। "the daily" को मूर्तिपूजकता के रूप में मिलर की पहचान, हबक्कूक की पट्टिकाओं पर प्रत्यक्ष रूप से प्रदर्शित है। थिस्सलुनीकियों की पत्री में उस खंड की मिलर द्वारा की गई खोज, जिसने उसे यह समझने में सक्षम किया कि "हटा दिया गया" वस्तुतः मूर्तिपूजकता ही थी, ताकि परमेश्वर के मंदिर में बैठने वाला "पाप का मनुष्य" प्रगट हो, वही 2 थिस्सलुनीकियों, अध्याय दो में निहित प्राथमिक सत्य है।

"मैं आगे पढ़ता गया, और दानिय्येल को छोड़ किसी और स्थान में मुझे वह ['नित्य'] नहीं मिला। तब मैंने [एक कंकॉर्ड्स की सहायता से] वे शब्द लिए जो उससे जुड़े हुए थे, 'हटा देना;' वह नित्य को हटा देगा; 'उस समय से

जब नित्य हटा दिया जाएगा,' आदि। मैं पढ़ता गया, और सोचा कि मुझे इस पाठ पर कोई प्रकाश न मिलेगा; अन्ततः मैं 2 थिस्सलुनीकियों 2:7, 8 पर पहुँचा। 'क्योंकि अधर्म का भेद तो अभी से ही काम कर रहा है; केवल जो अब रोकता है, वही तब तक रोके रहेगा, जब तक वह बीच से हटाया न जाए; और तब वह दुष्ट प्रगट होगा,' आदि। और जब मैं उस पाठ पर पहुँचा, ओ, सत्य कितना स्पष्ट और महिमामय प्रतीत हुआ! यही है! यही 'नित्य' है! तो अब, पौलुस का 'जो अब रोकता है,' या जो बाधा देता है, से क्या मतलब है? 'पाप का मनुष्य' और 'दुष्ट' से पापाई धर्म ही अभिप्रेत है। तो, ऐसा क्या है जो पापाई धर्म के प्रगट होने में बाधा देता है? दरअसल, वह मूर्तिपूजा है; तो फिर, 'नित्य' का अर्थ मूर्तिपूजा ही होना चाहिए।'-विलियम मिलर, सेकंड एडवेंट मैनुअल, पृष्ठ 66." एडवेंट रिव्यू एंड सब्बाथ हेराल्ड, 6 जनवरी, 1853.

थिस्सलुनीकियों में "the daily" का जो अर्थ मिलर ने खोजा, वही उस खंड का प्रधान सत्य है। जब पौलुस उन लोगों को चिन्हित करता है जो सत्य से प्रेम नहीं करते और इसलिए प्रबल भ्रम प्राप्त करेंगे, तब वह निश्चय ही सामान्य अर्थ में सत्य-घृणा की ही पहचान कर रहा होता है; परन्तु उस खंड में जो प्रत्यक्ष रूप से संदर्भित सत्य है, वह यह है कि "the daily" मूर्तिपूजक रोम का प्रतिनिधित्व करता है।

देह का दीपक आँख है; इसलिए यदि तेरी आँख अच्छी हो, तो तेरा सारा शरीर प्रकाश से भरा होगा। पर यदि तेरी आँख बुरी हो, तो तेरा सारा शरीर अंधकार से भरा होगा। इसलिए यदि जो प्रकाश तुझ में है वही अंधकार हो, तो वह अंधकार कितना घोर होगा! कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता; क्योंकि वह या तो एक से बैर करेगा और दूसरे से प्रेम करेगा, या एक से लगा रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा। तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते। मत्ती 6:22-24.

या तो सत्य से प्रेम है, या सत्य से घृणा। कोई मध्य मार्ग नहीं है। मत्ती पच्चीस की मूर्ख कुंवारियों पर आने वाला प्रबल भ्रम मिलर के रत्नों की उस ज्योति को अस्वीकार करने पर आधारित है, जो अंतिम परीक्षा का प्रतिनिधित्व करते हैं। प्राचीन इस्त्राएल की अंतिम परीक्षा उनकी दसवीं परीक्षा थी, और अंतिम दिनों में मिलर के रत्न दस गुना अधिक चमकते हैं। मिलर के रत्नों के अस्वीकार का प्रतीक 'the daily' है, जिसे इफ्राइम के पियक्कड़ों ने एडवेंटिज़्म की तीसरी पीढ़ी में उलट दिया। 'the daily' मूर्तिपूजा का शैतानी प्रतीक है। उन पियक्कड़ों ने एक नकली रत्न पेश किया, जिसे वे धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद से ले आए थे, जो 'the daily' को मसीह के प्रतीक के रूप में ठहराता है।

मिलर की अपने रत्नों के बारे में समझ उस इतिहास से सीमित थी, जिसमें वे पले-बढ़े थे। वे आश्चर्य थे कि दूसरा आगमन भविष्यवाणी की अगली घटना थी; अतः 1798 में पापसी को लगा घातक घाव केवल दानिय्येल के दूसरे अध्याय के चौथे और अंतिम पार्थिव राज्य का ही प्रतिनिधित्व कर सकता था। "the daily" के विषय में भी मिलर की समझ सीमित थी, क्योंकि उनकी गवाही यह है कि एक प्रकाशना के माध्यम से उन्हें अध्ययन की एक विशिष्ट विधि की ओर ले जाया गया, जिसमें उन्होंने कहा कि वे अपनी बाइबल, Cruden's Concordance का उपयोग करते थे और कुछ अखबार पढ़ते थे। उस तरीके से अध्ययन करने का उनका निर्णय बस उनके मन में आ गया था।

जिन बारह वर्षों तक मैं दैववादी रहा, मैंने जितने इतिहास-ग्रंथ मुझे उपलब्ध हो सके, सब पढ़े; पर अब मुझे बाइबल से प्रेम हो गया था। वह यीशु के विषय में सिखाती थी! फिर भी बाइबल का एक बड़ा भाग मेरे लिए अस्पष्ट था। 1818 या 19 में, जब मैं एक मित्र से, जिससे मिलने मैं गया था, बातचीत कर रहा था, और जो मुझे जानता था और [सुना] करता था जब मैं दैववादी था, तो उसने कुछ अर्थगर्भित ढंग से पूछा, 'इस पद और उस पद के विषय में तुम्हारा क्या विचार है?'—वह उन पुराने पदों का उल्लेख कर रहा था जिन पर मैंने दैववादी रहते हुए आपत्ति की थी। मैं समझ गया कि उसका आशय क्या है, और उत्तर दिया—'यदि तुम मुझे समय दोगे, तो मैं तुम्हें उनका अर्थ बता दूँगा।' 'तुम्हें कितना समय चाहिए?'—'मुझे नहीं मालूम, पर मैं तुम्हें बता दूँगा,' मैंने उत्तर दिया; क्योंकि मैं यह मान नहीं सकता था कि परमेश्वर ने ऐसी प्रकाशना दी हो जिसे समझा न जा सके। तब मैंने अपनी बाइबल का अध्ययन करने का निश्चय किया, यह मानते हुए कि मैं जान सकूँगा कि पवित्र आत्मा का अभिप्राय क्या है। पर जैसे ही मैंने यह निश्चय किया, मेरे मन में यह विचार आया—'यदि तुम्हें कोई ऐसा स्थल मिले जिसे तुम समझ न सको, तो तुम क्या करोगे?' तब बाइबल का अध्ययन करने की यह विधि मेरे मन में

आई: ऐसे स्थलों के शब्दों को लेकर मैं उन शब्दों का समस्त बाइबल में अनुसरण करूँगा, और इस प्रकार उनका अर्थ ज्ञात करूँगा। मेरे पास क्रूडन का कॉनकॉर्ड्स था, जिसे मैं संसार में सर्वश्रेष्ठ मानता हूँ; अतः मैंने उसे और अपनी बाइबल ली, मेज़ पर बैठ गया, और थोड़ा-बहुत समाचारपत्रों के सिवाय और कुछ नहीं पढ़ा, क्योंकि मैं यह जानने के लिए दृढ़संकल्प था कि मेरी बाइबल का अभिप्राय क्या है। Apollos Hale, The Second Advent Manual, 65.

मिलर के रत्न केवल उनकी अध्ययन-पद्धति से ही पहचाने नहीं गए थे, बल्कि ईश्वर से मिलने वाले प्रत्यक्ष प्रकटीकरण से भी।

“परमेश्वर ने अपने स्वर्गदूत को भेजा कि वह एक ऐसे किसान के हृदय पर प्रभाव डाले जिसने बाइबल पर विश्वास नहीं किया था, ताकि उसे भविष्यद्वाणियों की खोज करने के लिए प्रेरित करे। परमेश्वर के स्वर्गदूत बार-बार उस चुने हुए व्यक्ति से मिलने आए, ताकि उसके मन का मार्गदर्शन करें और उन भविष्यद्वाणियों को उसकी समझ के लिए खोल दें जो परमेश्वर की प्रजा के लिए सदा से अंधकारमय रही थीं। सत्य की श्रृंखला का प्रारम्भ उसे दिया गया, और वह एक-एक कड़ी खोजता हुआ आगे बढ़ता गया, यहाँ तक कि उसने परमेश्वर के वचन को विस्मय और प्रशंसा के साथ निहारा। उसने वहाँ सत्य की एक सिद्ध श्रृंखला देखी। वह वचन, जिसे उसने पहले प्रेरणाहीन समझा था, अब अपनी शोभा और महिमा में उसकी दृष्टि के सामने खुल गया। उसने देखा कि पवित्रशास्त्र का एक भाग दूसरे भाग की व्याख्या करता है, और जब कोई एक अंश उसकी समझ के लिए बंद होता था, तब वह वचन के किसी अन्य भाग में वह बात पाता था जो उसकी व्याख्या कर देती थी। उसने परमेश्वर के पवित्र वचन को आनंद के साथ, और अत्यन्त गहरे आदर तथा भयमिश्रित श्रद्धा के साथ ग्रहण किया।” आरंभिक लेखन, 230।

जब सिस्टर व्हाइट कहती हैं कि 'परमेश्वर ने अपना दूत भेजा' मिलर के पास, तो इससे यह संकेत मिलता है कि मिलर के पास भेजा गया दूत गब्रियल था, क्योंकि 'उसका दूत' गब्रियल के लिए प्रयुक्त एक पद है।

स्वर्गदूत के ये शब्द, “मैं जिब्राएल हूँ, जो परमेश्वर के सम्मुख खड़ा रहता हूँ,” यह प्रकट करते हैं कि वह स्वर्गीय दरबारों में उच्च सम्मान का स्थान रखता है। जब वह दानिय्येल के पास एक संदेश लेकर आया, तब उसने कहा, “इन बातों में मेरे पक्ष में कोई स्थिर नहीं रहता, केवल तुम्हारा प्रधान मीकाएल [मसीह] ही है।” दानिय्येल 10:21। जिब्राएल के विषय में उद्धारकर्ता प्रकाशितवाक्य में कहते हैं कि “उसने अपने दूत के द्वारा अपने दास यूहन्ना को भेजकर उसे संकेत से प्रकट किया।” प्रकाशितवाक्य 1:1। —The Desire of Ages, 99.

गब्रियल और अन्य स्वर्गदूतों ने मिलर के मन को मार्गदर्शित किया और उसकी समझ के लिए उन भविष्यद्वाणियों को खोल दिया जो सदैव से परमेश्वर की प्रजा के लिए अंधकारमय रही थीं। उसका संदेश केवल उसकी अध्ययन-पद्धति के द्वारा ही विकसित नहीं हुआ, परन्तु दिव्य प्रकाशन के द्वारा भी। बाइबल का अध्ययन करने के लिए जिस पद्धति का उसने उपयोग किया, वही पद्धति स्वतः उसके मन में आ गई। जब परमेश्वर हमारे मन में सत्य लाते हैं, तो वह दिव्य प्रकाशन होता है; यह उस स्थिति से भिन्न है जब कोई बाइबल का यथोचित रूप से विभाजन करने की प्रक्रिया द्वारा सत्य तक पहुँचता है। मिलर ने दोनों ही किए, परन्तु “the daily” के विषय की समझ तक वह जिस प्रकार पहुँचा, उसमें दिव्य प्रकाशन भी एक अंग था।

मिलर दानिय्येल अध्याय आठ, पद नौ से बारह तक में व्याकरणिक लिंग में होने वाले परिवर्तन को नहीं पहचान पाता था, क्योंकि उसके पास केवल बाइबल और एक ऐसी शब्दानुक्रमणिका ही थी जो बाइबिलीय भाषाओं के संबंध में किसी भी जानकारी से रहित थी। वह 'sur' और 'rum' के बीच का अंतर नहीं देख पाता था, जिनका अनुवाद दोनों ही बार 'हटा देना' किया गया है। वह 'miqdash' और 'qodesh' के बीच का अंतर भी नहीं देख पाता था, जिनका अनुवाद दोनों ही बार 'पवित्रस्थान' किया गया है।

उसने 'तमीद' शब्द के उस सत्य को न देखा होता, जो बाइबल में एक सौ चार बार पाया जाता है। वह सत्य, जिसे वह नहीं देख सकता था (जो वही सत्य है जिसे उसने देखा भी), यह था कि बाइबल में इब्रानी शब्द 'तमीद' कुल एक सौ

चार बार प्रयुक्त हुआ है, परन्तु यह इब्रानी शब्द 'तमीद' संज्ञा के रूप में केवल दानिय्येल की पुस्तक में ही प्रयुक्त हुआ है। 'तमीद' वह इब्रानी शब्द है जिसका अर्थ 'निरंतर' है, और दानिय्येल की पुस्तक में इसका अनुवाद 'दैनिक' के रूप में किया गया है।

केवल दानिय्येल की पुस्तक में उस शब्द का प्रयोग संज्ञा के रूप में किया गया है, और अन्य निन्यानवे बार उसका प्रयोग क्रियाविशेषण के रूप में किया गया है। इसी कारण, जब किंग जेम्स बाइबल के अनुवादकों का सामना इस तथ्य से हुआ कि दानिय्येल ने उस शब्द का प्रयोग पाँच बार संज्ञा के रूप में किया है, जबकि बाइबल के अन्य सभी लेखकों ने उस शब्द का निन्यानवे बार क्रियाविशेषण के रूप में किया है, तो वे प्रमाणों के भार से दानिय्येल के उस शब्द के संज्ञा रूप वाले प्रयोग को 'सुधारने' के लिए विवश हो गए। दानिय्येल को 'सुधारने' के लिए, उन्होंने उस शब्द के साथ 'sacrifice' शब्द जोड़ दिया, और इस प्रकार एक संज्ञा को क्रियाविशेषण में बदल दिया। और फिर अनुवादकों को सुधारने के लिए, एलेन व्हाइट को यह लिखने की प्रेरणा दी गई कि उन्होंने, " 'Daily' के संबंध में देखा कि 'sacrifice' शब्द मनुष्य की बुद्धि से जोड़ा गया था, और वह पाठ का भाग नहीं है; और यह कि प्रभु ने उसके विषय में सही दृष्टि उन लोगों को दी जिन्होंने न्याय-घड़ी की पुकार दी।"

मिलर, अपने ही कथन के अनुसार, "दैनिक" को समझने की खोज में थे, जिसे अंततः उन्होंने 2 थिस्सलुनीकियों में समझ लिया। परन्तु, अपने ही कथन के अनुसार, किसी शब्द को समझते समय वे उस हर स्थान पर विचार करते थे जहाँ वह शब्द प्रयुक्त हुआ है, और वह शब्द बाइबल में अन्य निन्यानवे बार प्रयुक्त हुआ है। फिर भी "दैनिक" के विषय में उनका कथन यह है कि इसे उन्हें दानिय्येल की पुस्तक के सिवा कहीं नहीं मिला, जब उन्होंने कहा, "मैं आगे पढ़ता गया, और मुझे कोई अन्य उदाहरण न मिला जिसमें यह ['दैनिक'] पाया जाता हो; यह केवल दानिय्येल में मिला।" मिलर रत्नों तक केवल अपनी अध्ययन-पद्धति से ही नहीं पहुँचे, बल्कि स्वर्गदूतों की सेवकाई के माध्यम से उन्हें दी गई दैवीय प्रकाशना से भी।

इसी कारण 'दैनिक' के बारे में उसकी समझ सही तो थी, पर सीमित थी। वह यह नहीं पहचान सका कि दानिय्येल की पुस्तक में 'दैनिक' का पाँच बार उल्लेख है; और जिन तीन प्रसंगों में 'दैनिक' को 'हटा लिया गया' बताया गया है, उनमें से एक का अर्थ शेष दो से भिन्न है। एक बार 'दैनिक' हिब्रू शब्द 'rum' के साथ प्रयुक्त किया गया है, और अन्य दो बार हिब्रू शब्द 'sur' के साथ। दोनों शब्दों का अनुवाद 'हटा देना' किया जाता है, लेकिन दानिय्येल अध्याय 8, पद 11 में 'rum' का अर्थ ऊँचा उठाना और महिमा देना है, और अध्याय 11, पद 31 तथा अध्याय 12, पद 11 में 'sur' का अर्थ हटाना है।

जो धर्मशास्त्री बाबुल का भोजन खाते-पीते हैं, वे तर्क देते हैं कि चाहे कोई किसी वस्तु को हटाए या उसे उठाए, दोनों ही किसी न किसी रूप में हटाने का ही अर्थ रखते हैं; अतः दोनों शब्दों को समान अर्थ वाला समझा जाना चाहिए। वे यह भी तर्क देते हैं कि जहाँ-जहाँ तीन बार "the daily" को "taken away" कहा गया है, वहाँ हर बार उसका अर्थ हटाना ही है, और ऐसा करते हुए वे यह दर्शाते हैं कि दानिय्येल ने अपने शब्द-चयन में लापरवाही की। वे इसे खुलकर नहीं कहते, परोक्ष रूप से वे यह सिखाते हैं कि दानिय्येल को तीनों प्रसंगों में "sur" शब्द ही प्रयोग करना चाहिए था, क्योंकि धर्मशास्त्रियों के अनुसार हर बार जब "the daily" को "taken away" कहा गया, दानिय्येल का आशय एक ही बात से था।

वे 'miqdash' और 'qodesh' शब्दों के साथ भी वही करते हैं, जिनका अनुवाद अध्याय आठ की ग्यारह से चौदहवीं आयतों में 'पवित्रस्थान' किया गया है। उन चारों आयतों में 'पवित्रस्थान' के प्रत्येक उल्लेख के लिए वे आग्रह करते हैं कि वे सभी परमेश्वर के पवित्रस्थान का ही प्रतिनिधित्व करते हैं। इसी तर्क से, दैनियल को तीनों संदर्भों में केवल 'qodesh' का ही प्रयोग करना चाहिए था, और ग्यारहवीं आयत में 'miqdash' का प्रयोग नहीं करना चाहिए था। मिलर उन शब्दों के बीच के भेद को नहीं पहचानता था, लेकिन आधुनिक धर्मशास्त्री पहचानते हैं, और जब वे ऐसा करते हैं तो इस पर जोर देते हैं कि किसी भेद को स्वीकार न किया जाए। फिर भी मिलर, जिसने शब्दों के बीच के भेदों को नहीं पहचाना था, आधुनिक धर्मशास्त्रियों के विपरीत समझ पर पहुँचा।

वास्तविकता यह है कि दानिय्येल एक सावधान लेखक था, जो इब्रानी भाषा जानता था और जिसे बाबुल के अन्य सभी ज्ञानी जनों से दस गुना अधिक बुद्धिमान माना गया था। यदि किसी को इब्रानी भाषा के उचित प्रयोग का ज्ञान था, और उस विशेष इतिहास में उसे किस प्रकार सही रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए, तो वह दानिय्येल ही था। यदि दानिय्येल ने भिन्न शब्दों का प्रयोग किया, तो ऐसा इसलिए था क्योंकि वे भिन्न अर्थ प्रकट करने के लिए थे, जिन्हें वह जान-बूझकर दर्शाना चाहता था। जब दानिय्येल के उन शब्दों के विशिष्ट प्रयोग को, जिन्हें "sanctuary" या "take away" के रूप में अनूदित किया जाता है, स्वीकार किया जाता है, तो वे "दैनिक" के विषय में मिलर की समझ का समर्थन करते हैं, जिसे मिलर ने उसी अंश में पहचाना था जहाँ पौलुस यह बताता है कि जो सत्य से घृणा करते हैं, वे प्रबल भ्रम प्राप्त करने के लिए नियत हैं।

जो सत्य से घृणा करते हैं और उस झूठ पर विश्वास करते हैं जो प्रबल भ्रम उत्पन्न करता है, उन्हें इफ्राइम के मतवालों के रूप में भी दर्शाया गया है, जिन्हें दो श्रेणियों में प्रस्तुत किया गया है। एक श्रेणी विद्वान नेतृत्व की है, और दूसरी श्रेणी अविद्वानों की, जो केवल वही सुनेंगे जो विद्वान उन्हें सिखाते हैं। वे वे हैं जो झूठ के सहारे छिपते हैं, और जो मृत्यु के साथ वाचा बाँधते हैं। वे मत्ती अध्याय पच्चीस की मूर्ख कुँआरियाँ हैं, और हबक्कूक अध्याय दो में जिनका मन फूला हुआ है। वे वे हैं जो मिलर के स्वप्न के मूलभूत सत्यों को अस्वीकार करते हैं, जो अंत में दस गुना अधिक चमकते हैं (जो आधुनिक इस्राएल के लिए दसवीं और अंतिम परीक्षा का प्रतिनिधित्व करते हैं), जैसा कि प्राचीन इस्राएल की दसवीं और अंतिम परीक्षा द्वारा प्रतिरूपित किया गया है।

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

और यहोवा ने मूसा से कहा, यह प्रजा कब तक मुझे उकसाती रहेगी? और मैं ने उनके बीच जो सब चिन्ह दिखाए हैं, उनके रहते हुए भी वे कब तक मुझ पर विश्वास न करेंगे? मैं उन्हें महामारी से मारूँगा, और उन्हें उत्तराधिकार से वंचित कर दूँगा, और तुझ से उनसे भी बड़ा और अधिक बलवान एक राष्ट्र उत्पन्न करूँगा। तब मूसा ने यहोवा से कहा, तब मिस्री यह बात सुनेंगे (क्योंकि तू ने अपनी शक्ति से इस प्रजा को उनके बीच से निकाल लाया है) और वे इस देश के निवासियों को यह बतलाएँगे; क्योंकि उन्होंने सुना है कि तू, यहोवा, इस प्रजा के मध्य वास करता है, कि तू, यहोवा, सामने-सामने देखा जाता है, और कि तेरा बादल उनके ऊपर ठहरा रहता है, और कि दिन को तू बादल के खम्भे में, और रात को अग्नि के खम्भे में उनके आगे-आगे चलता है। अब यदि तू इस सारी प्रजा को एक मनुष्य के समान मार डाले, तो वे राष्ट्र, जिन्होंने तेरी कीर्ति सुनी है, कहेंगे, कि क्योंकि यहोवा इस प्रजा को उस देश में, जिसकी शपथ उसने उनसे खाई थी, पहुँचाने में समर्थ न था, इसलिये उसने उन्हें जंगल में मार डाला।

और अब, मैं तुझसे विनती करता हूँ, जैसा तू ने कहा है, वैसा ही मेरे प्रभु की शक्ति महान ठहरे: कि 'यहोवा धीरजवन्त और बड़ी करुणा से परिपूर्ण है, अधर्म और अपराध को क्षमा करता है; परन्तु दोषी को किसी प्रकार निर्दोष नहीं ठहराता; वह पितरों के अधर्म का दण्ड सन्तानों को तीसरी और चौथी पीढ़ी तक देता है।' इसलिये, मैं तुझसे विनती करता हूँ, अपनी करुणा की महानता के अनुसार, और जैसे तू ने इस प्रजा को, मिस्र से लेकर अब तक, क्षमा किया है, वैसे ही इस प्रजा के अधर्म को क्षमा कर। तब यहोवा ने कहा, 'मैं ने तेरे वचन के अनुसार क्षमा कर दी; परन्तु, जैसा कि मैं जीवित हूँ, सारी पृथ्वी यहोवा की महिमा से भर जाएगी। क्योंकि वे सब मनुष्य जिन्होंने मेरी महिमा और वे चमत्कार देखे जो मैं ने मिस्र में और जंगल में किए, तौभी अब तक दस बार मुझे परखा है और मेरी वाणी नहीं मानी, निश्चय वे उस देश को न देखेंगे जिसकी शपथ मैं ने उनके पितरों से खाई थी; जिन्होंने मुझे क्रोधित किया है, उनमें से कोई उसे न देखेगा। परन्तु मेरा दास कालेब, क्योंकि उसमें भिन्न आत्मा थी, और वह पूरी रीति से मेरे पीछे चला है, उसे मैं उस देश में ले जाऊँगा जहाँ वह गया था; और उसकी सन्तान उस पर अधिकार करेगी। गिनती 14:11-24.